१७ दीह-रहस्साणुयोगद्दारं

संभवमरणविवज्जियमहिवंदिय संभवं पयत्तेण❂ ।
दीह-रहस्सणुयोगं वोच्छमि जहाणुपुव्वीए ॥ १ ॥

दीह-रहस्से त्ति अणुयोगद्दारं भण्णमाणे तत्थ दीहं चउव्विहं पयडिदीहं ठिदिदीहं अणुभागदीहं पदेसदीहं चेदि । तत्थ पयडिदीहं दुविहं मूलपयडिदीहं उत्तरपयडिदीहं चेदि । तत्थ मूलपयडिदीहं दुविहं पयडिट्ठाणदीहं एगेगपयडिट्ठाणदीहं चेदि । तत्थ पयडिट्ठाणं पडुच्च अत्थि❃ दीहं । तं जहा– अट्ठसु पयडीसु बज्झमाणियासु पयडिदीहं, तदूणासु बज्झमाणियासु णोपयडिदीहं । संतं पडुच्च अट्ठसु पयडीसु संतासु पयडिदीहं, तदूणासु णोपयडिदीहं । उदयं पडुच्च अट्ठसु पयडीसु उदिण्णासु पयडिदीहं, तदूणासु णोपयडिदीहं । एगेगपयडिं पडुच्च णत्थि पयडिदीहं ।

उत्तरपयडीसु पंचणाणावरणीय-पंचंतराइयाणं णत्थि पयडिदीहं । दंसणावरणीयस्स णव पयडीओ बंधमाणस्स अत्थि पयडिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णत्थि पयडिदीहं । एवं संतोदयमस्सिदूण वि वत्तव्वं । वेयणीयस्स बंधोदयमस्सिदूण णत्थि पयडिदीहं । संतं पडुच्च अत्थि, अजोगिचरिमसमए एयपयडिसंतं पेक्खिदूण तस्सेव

जन्म और मरणसे रहित ऐसे सम्भव जिनेन्द्रकी वन्दना करके प्रयत्नपूर्वक आनुपूर्वीके अनुसार दीर्घ-ह्रस्वानुयोगद्वारकी प्ररूपणा करता हूं ॥ १ ॥

दीर्घ-ह्रस्वानुयोगद्वारका कथन करनेमें वहां दीर्घ चार प्रकारका है– प्रकृतिदीर्घ, स्थितिदीर्घ, अनुभागदीर्घ और प्रदेशदीर्घ । उनमें प्रकृतिदीर्घके दो भेद हैं– मूलप्रकृतिदीर्घ और उत्तरप्रकृतिदीर्घ । इनमें मूलप्रकृतिदीर्घ दो प्रकारका है– प्रकृतिस्थानदीर्घ और एक-एकप्रकृतिस्थानदीर्घ । उनमें प्रकृतिस्थानकी अपेक्षा दीर्घ सम्भव है । वह इस प्रकारसे– आठ प्रकृतियोंका बन्ध होनेपर प्रकृतिदीर्घ और उनसे कमका बन्ध होनेपर नोप्रकृतिदीर्घ होता है । सत्त्वकी अपेक्षा आठ प्रकृतियोंके सत्त्वके होनेपर प्रकृतिदीर्घ और उनसे कमका सत्त्व होनेपर नोप्रकृतिदीर्घ होता है । उदयकी अपेक्षा आठ प्रकृतियोंके उदीर्ण होनेपर प्रकृतिदीर्घ और उनसे कमके उदीर्ण होनेपर नोप्रकृतिदीर्घ होता है । एक एक प्रकृतिकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ सम्भव नहीं है ।

उत्तर प्रकृतियोंमें पांच ज्ञानावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंमें प्रकृतिदीर्घ सम्भव नहीं है । दर्शनावरणकी नौ प्रकृतियोंको बांधनेवालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कम बांधनेवालेके प्रकृतिदीर्घ नहीं है । इसी प्रकारसे इनके सत्त्व और उदयका आश्रय करके भी कथन करना चाहिये । वेदनीयके बन्ध और उदयका आश्रय करके प्रकृतिदीर्घ नहीं है । सत्त्वकी अपेक्षा उसकी सम्भावना है, क्योंकि, अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें एक प्रकृतिके सत्त्वकी अपेक्षा

❂ ताप्रतौ 'पत्तएण' इति पाठः । ❃ ताप्रतौ 'तत्थमपडिद्धाणं अत्थि' इति पाठः ।

दुचरिमादिसमएसु दोपयडिसंतस्स दीहत्तुवलंभादो। मोहणीयस्स संतं पडुच्च अट्ठावीसपयडीयो पयडिदीहं, तदूणं णोपयडिदीहं। बंधं पडुच्च✿ बावीस पयडीयो बंधमाणस्स पयडिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोपयडिदीहं। उदयं पडुच्च दस पयडीयो पयडिदीहं, तदूणं णोपयडिदीहं।

आउअस्स बंधोदयं पडुच्च णत्थि पयडिदीहं संतं पडुच्च अत्थि, परभवियाउए बद्धे दोण्णं पयडीणं संतदंसणादो। णामस्स एक्कतीसपयडीओ बंधोदयं पडुच्च पयडिदीहं, तदूणं णोपयडिदीहं। संतं पडुच्च तिणउदिपयडीओ पयडिदीहं, तदूणं णोपयडिदीहं। गोदस्स बंधोदयं पडुच्च णत्थि पयडिदीहं। संतं पडुच्च अत्थि, अजोगिचरिमसमए पयडिसंतं पेक्खिदूण दुचरिमादिसमयसंतस्स दीहत्तुवलंभादो। एवं पयडिदीहं समत्तं।

ठिदिदीहं दुविहं मूलपयडिट्ठिदिदीहं उत्तरपयडिट्ठिदिदीहं चेदि। तत्थ मूलपयडिट्ठिदिदीहं वुच्चदे। तं जहा-- णाणावरण-दंसणावरण-वेयणीय-अंतराइयाणं तीसंसागरोवमकोडाकोडीयो बंधमाणस्स ट्ठिदिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोट्ठिदिदीहं। मोहणीयस्स सत्तारिसागरोवमकोडाकोडीयो बंधमाणस्स ट्ठिदिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोट्ठिदिदीहं। आउअस्स तेत्तीसंसागरोवमाणि बंधमाणस्स ट्ठिदिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स

उसीके द्विचरम-त्रिचरम आदि समयोंमें वेदनीयकी दो प्रकृतियोंके सत्त्वकी दीर्घता पायी जाती है। मोहनीयके सत्त्वकी अपेक्षा अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कमकी सत्तावालेके नोप्रकृतिदीर्घ है। बन्धकी अपेक्षा बाईस प्रकृतियोंको बांधनेवालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कमको बांधनेवालेके नोप्रकृतिदीर्घ है। उदकी अपेक्षा दस प्रकृतियोंके उदयवालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे उदयवालेके नोप्रकृतिदीर्घ है।

आयु कर्मके बन्ध और उदयकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ नहीं है। किन्तु सत्त्वकी अपेक्षा है, क्योंकि, परभविक आयुका बन्ध होनेपर दो आयु प्रकृतियोंका सत्त्व देखा जाता है। नामकर्मकी इकतीस प्रकृतीयोंके बन्ध और उदयकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कमका बन्ध व उदय होनेपर नोप्रकृतिदीर्घ है। सत्त्वकी अपेक्षा तेरानबै प्रकृतियोंकी सत्तावालेके प्रकृतिदीर्घ है, उनसे कमकी सत्तावालेके नोप्रकृतिदीर्घ है। गोत्रके बन्ध और उदयकी अपेक्षा प्रकृतिदीर्घ नहीं है। किन्तु सत्त्वकी अपेक्षा उसके प्रकृतिदीर्घ है, क्योंकि, अयोगकेवलीके अन्तिम समय सम्बन्धी प्रकृति-सत्त्वकी अपेक्षा करके द्विचरम आदि समय सम्बन्धी सत्त्वके दीर्घता पायी जाती है। इस प्रकार प्रकृतिदीर्घ समाप्त हुआ।

स्थितिदीर्घ दो प्रकारका है– मूलप्रकृतिस्थितिदीर्घ और उत्तरप्रकृतिस्थितिदीर्घ। उनमें मूलप्रकृतिस्थितिदीर्घकी प्ररूपणा करते हैं। यथा– ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अन्तराय; इनकी तीस कोड़ाकोड़ि सागरोपम प्रमाण स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिदीर्घ है, उससे कम स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिदीर्घ है। मोहनीयकी सत्तर कीड़ाकोड़ि सागरोपम स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिदीर्घ है, उससे कम बांधनेवालेके नोस्थितिदीर्ध है। आयुको तेतीस सागरोपम स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिदीर्घ है, उससे कम स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिदीर्घ है। नाम व गोत्रकी

✿ अप्रतौ 'आउअस्स बंधोदयं पडुच्च' इति पाठः।

णोट्ठिदिदीहं। णामा-गोदाणं बीसंसागरोवमकोडाकोडीयो बंधमाणस्स ट्ठिदिदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोट्ठिदिदीहं। एवमुत्तरपयडीणं पि जाणिदूण ट्ठिदिदीहपरूवणा कायव्वा।

अप्पप्पणो उक्कस्समाणुभागट्ठाणाणि बंधमाणस्स अणुभागदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोअणुभागदीहं। सव्वासिं पयडीणं सग-सगपाओग्गउक्कस्सपदेसे✲ बंधमाणस्स पदेसदीहं, तदूणं बंधमाणस्स णोपदेसदीहं। एवं दीहं ति समत्तं।

रहस्से पयदं❋ -- तं चउव्विहं पयडिरहस्सं ट्ठिदिरहस्सं अणुभागरहस्सं पदेसरहस्सं चेदि। तत्थि पयडिरहस्सं दुविहं मूलपयडिरहस्सं उत्तरपयडिरहस्सं चेदि। मूलपयडि-रहस्सं दुविहं पयडिट्ठाणरहस्सं एगेगपयडिरहस्सं चेदि। पयडिट्ठाणे अत्थि रहस्सं। तं जहा-- एगेगपयडिं बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोपयडि-रहस्सं। संतं पडुच्च चत्तारिसंतकम्मिस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि णोपयडिरहस्सं। एगेगपयडिरहस्सं णत्थि।

उत्तरपयडीसु पयदं- पंचणाणावरण-पंचंतराइयाणं णत्थि पयडिरहस्सं। दंसणावरणीए चत्तारि पयडीयो बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोपयडिरहस्सं। मोहणीए एयं बंधमाणस्स पयडिरहस्सं तदुवरि णोपयडिरहस्सं। आउ-अस्स बंधं पडुच्च पयडिरहस्सं णत्थि, दोण्णमाउआणमक्कमेण बंधाभावादो। संतं पडुच्च अत्थि पयडिरहस्सं, अबद्ध♣परभवियाउअम्मि एक्कस्स चेव आउअस्स उवलंभादो।

बीस कोडाकोडि सागरोपम स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिदीर्घ है, उससे कम बांधनेवालेके नो-स्थितिदीर्घ है। इसी प्रकार उत्तर प्रकृतियोंके भी स्थितिदीर्घकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये।

अपने अपने उत्कृष्ट अनुभागस्थानोंको बांधनेवालेके अनुभागदीर्घ है, उनसे कम बांध-नेवालेके नोअनुभागदीर्घ है। सब प्रकृतियोंके अपने अपने योग्य प्रदेशोंको बांधनेवालेके प्रदेश-दीर्घ है, उससे कम बांधनेवालेके नोप्रदेशदीर्घ है। इस प्रकार दीर्घका कथन समाप्त हुआ।

ह्रस्वका प्रकरण है- वह प्रकृतिह्रस्व, स्थितिह्रस्व, अनुभागह्रस्व और प्रदेशह्रस्वके भेदसे चार प्रकारका है। उनमें प्रकृतिह्रस्व दो प्रकारका है- मूलप्रकृतिह्रस्व और उत्तरप्रकृति-ह्रस्व। मूलप्रकृतिह्रस्व दो प्रकारका है- प्रकृतिस्थानह्रस्व और एक-एकप्रकृतिह्रस्व। प्रकृति-स्थानमें ह्रस्व है। यथा- एक एक प्रकृतिको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, उससे अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है। सत्त्वकी अपेक्षा चार कर्मोंकी सत्तावालेके प्रकृतिह्रस्व है, उनसे अधिक प्रकृतियोंकी सत्तावालेके नोप्रकृतिह्रस्व है। एक-एकप्रकृतिह्रस्व नहीं है।

उत्तर प्रकृतियोंका प्रकरण है- पांच ज्ञानावरण और पांच अन्तराय प्रकृतियोंके प्रकृति-ह्रस्व नहीं है। दर्शनावरणकी चार प्रकृतियोंको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, उनसे अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है। मोहनीयकी एक प्रकृतिको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है। आयुके बन्धकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्व नहीं है, क्योंकि, आयुकी दो प्रकृतियोंका युगपत् बन्ध संभव नहीं है। सत्त्वकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्व संभव है, क्योंकि,

---

✲ ताप्रतौ 'पदेसं' इति पाठः। ❋ अ-काप्रत्योः 'पयं' इति पाठः। ♣ ताप्रतौ 'बद्ध-' इति पाठः।

णामस्स जसकित्ति बंधमाणस्स पयडिरहस्सं, तदुवरि णोपयडिरहस्सं। गोद-वेयणीयाणं बंधं पडुच्च णत्थि पयडिरहस्सं, उच्च-णीचागोदाणं सादासादवेदणीयाणं च अक्कमेण बंधाभावादो। एवं पयडिरहस्सं गदं।

ट्ठिदिरहस्सं दुविहं मूलपयडिट्ठिदिरहस्सं उत्तरपयडिट्ठिदिरहस्सं चेदि। तत्थ मूलपयडिट्ठिदिरहस्से च❂ पयदं— णाणावरणीय-दंसणावरणीय-मोहणीय-आउअ-अंतराइयाणं अंतोमुहुत्तट्ठिदिं बंधमाणस्स ट्ठिदिरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोट्ठिदिरहस्सं। वेदणीयस्स बारसमुहुत्तं ट्ठिदिं बंधमाणस्स ट्ठिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं। णामा-गोदाणमट्ठमुहुत्तं ट्ठिदिं बंधमाणस्स ट्ठिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं। संतं✿ पडुच्च सव्वासिं पयडीणमेयट्ठिदिसंतकम्मस्स ट्ठिदिरहस्सं,▣ तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं।

उत्तरपयडीसु पयडं— बंधं पडुच्च ट्ठिदिरहस्से भण्णमाणे जहा जीवट्ठाणचूलियाए उत्तरपयडीणं जहण्णट्ठिदिपरूवणा कदा तहा कायव्वा। संपदि संतं पडुच्च वुच्चदे। तं जहा-- पंचणाणावरणीय- णवदंसणावरणीय--सादासाद-सम्मत्त- मिच्छत्त-सम्मा-

---

परभविक आयुके बन्धसे रहित जीवके एक ही आयुका सत्त्व पाया जाता है। नामकर्मकी यशकीर्तिको बांधनेवालेके प्रकृतिह्रस्व है, उससे अधिक बांधनेवालेके नोप्रकृतिह्रस्व है। गोत्र और वेदनीय कर्मोंके बन्धकी अपेक्षा प्रकृतिह्रस्व नहीं है, क्योंकि, उच्च व नीच गोत्रोंका तथा साता व असाता वेदनीयोंका युगपत् बन्ध सम्भव नहीं है। इस प्रकार प्रकृतिह्रस्व समाप्त हुआ।

स्थितिह्रस्व दो प्रकारका है-- मूलप्रकृतिस्थितिह्रस्व और उत्तरप्रकृतिस्थितिह्रस्व इनमें मूलप्रकृतिस्थितिह्रस्वका प्रकरण है— ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, आयु और अन्तरायकी अन्तर्मुहूर्त स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिह्रस्व है; इससे अधिक स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिह्रस्व है। वेदनीयकी बारह मुहूर्त मात्र स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक स्थितिको बांधनेवालेके नोस्थितिह्रस्व है। नाम और गोत्रकी आठ मुहूर्त मात्र स्थितिको बांधनेवालेके स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक बांधनेवालेके नोस्थितिह्रस्व है। सत्त्वकी अपेक्षा सब प्रकृतियोंके एक स्थितिसत्कर्म सहितक स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक सत्कर्मवालेके नोस्थितिह्रस्व है।

उत्तर प्रकृतियोंका प्रकरण है— बन्धकी अपेक्षा स्थितिह्रस्वका कथन करनेपर जैसे जीवस्थानकी चूलिकामें उत्तर प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका कथन किया गया है वैसे ही यहां उसका कथन करना चाहिये।

अब सत्त्वकी अपेक्षा स्थितिह्रस्वका कथन करते हैं। यथा— पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, तेरह कषाय,

---

❂ ताप्रतौ 'रहस्सेह च' इति पाठः। ✿ प्रतिषु 'तं' इति पाठः।
▣ प्रतिषु 'सतकम्मं सेसट्ठिदिरहस्सं' इति पाठः।

मिच्छत्त-तेरसकसाय-इत्थि-णवुंसयवेद-चत्तारिआउअ-सव्वणामपयडि--णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणमेया ट्ठिदी ट्ठिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं। कोधसंजलणाए अंतोमुहुत्तूणबेमासा ट्ठिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं। माणसंजलणाए अंतोमुहुत्तूणमासो ट्ठिदिरहस्सं। मायासंजलणाए पक्खो देसूणो ट्ठिदिरहस्सं। पुरिसवेदस्स अट्ठवासा देसूणा ट्ठिदिरहस्सं। तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं। छण्णोकसायाणं संखेज्जाणि वस्साणि ट्ठिदिरहस्सं, तदुवरि णोट्ठिदिरहस्सं। एवं ट्ठिदिरहस्से त्ति समत्तं।

अणुभागरहस्से पयदं। तं जहा– सव्वासिं पयडीणं अप्पप्पणो जहण्णाणुभागट्ठाणं बंधमाणस्स अणुभागरहस्सं, तदुवरि बंधमाणस्स णोअणुभागरहस्सं।

पदेसरहस्से पयदं। तं जहा– सव्वासिं पयडीणं सग-सगजहण्णपदेसे बंधमाणस्स पदेसरहस्सं। संतं✱ पडुच्च खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण गुणसेडिणिज्जरं काऊण सव्वजहण्णीकयपदेसस्स पदेसरहस्सं, तदुवरि णोपदेसरहस्सं। एवं दीह-रहस्से त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, चार आयु, सब नामप्रकृतियां, नीच व उच्च गोत्र तथा पांच अन्तराय; इनकी एक स्थिति स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक नोस्थितिह्रस्व है। संज्वलनक्रोधकी अन्तर्मुहूर्त कम दो मास स्थिति स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक नोस्थितिह्रस्व है। संज्वलन मानकी अन्तर्मुहूर्त कम एक मास स्थिति स्थितिह्रस्व है। संज्वलन मायाकी कुछ कम एक पक्ष स्थिति स्थितिह्रस्व है। पुरुषवेदकी कुछ कम आठ वर्ष स्थिति स्थितिह्रस्व है। उससे अधिक स्थिति नोस्थितिह्रस्व है। छह नोकषायोंकी संख्यात वर्ष स्थिति स्थितिह्रस्व है, उससे अधिक स्थिति नोस्थितिह्रस्व है। इस प्रकार स्थितिह्रस्व समाप्त हुआ।

अनुभागह्रस्वका प्रकरण है। यथा– सब प्रकृतियोंके अपने अपने जघन्य अनुभाग-स्थानको बांधनेवालेके अनुभागह्रस्व है, उससे अधिक अनुभागस्थानको बांधनेवालेके नोअनुभागह्रस्व है।

प्रदेशह्रस्व अधिकारप्राप्त है। यथा सब प्रकृतियोंके अपने अपने जघन्य प्रदेशोंको बांधनेवालेके प्रदेशह्रस्व है सत्त्वकी अपेक्षा क्षपितकर्मांशिक स्वरूपसे आकर गुणश्रेणिनिर्जराको करके जिसने प्रदेशको सबसे जघन्य कर लिया है उसके प्रदेशह्रस्व है, उससे अधिकके नोप्रदेश-ह्रस्व है। इस प्रकार दीर्घ-ह्रस्व यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

✱ प्रतिषु 'तं' इति पाठः।